63-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 948 Participant Code: 301

पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज

उत्तर में हिमालय की अनश्वर बर्फ से लेकर मध्य भारत के पठार से गुजरते हुए दक्षिण के समुद्री तट तक, राजस्थान के रेगिस्तान से लेकर सूर्य की पहली दर्शन मिलने वाली अरुणाचल प्रदेश तक पाया जाता है भारत में विविधता में एकता। भारत दुनिया की सबसे बड़ी आबादी को छाया देती आ रही है। इतने भौगोलिक विविधताएँ अकसर ढेर सारे विदेशियों को स्वागत करते है। लेकिन एक विदेशी भारत को अन्य देशों के साथ तालमेल करती है स्वच्छता के नाम पर।

एक मनुष्य की संबंध में उसकी स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी संपत्ति हो सकती है। इस संपत्ति की देखभाल केवल स्वच्छता को बनाए रखने से ही संभव होगा।

स्वच्छता को तीन में विभाजित किया जा सकता है : आंतरिक स्वच्छता, शारिरिक स्वच्छता और पारिस्थितिक स्वच्छता। आंतरिक स्वच्छता मन में सकारात्मक चिंता जगाने से आयेगा और शारिरिक नहाने, धोने से। लेकिन पारिस्थितिक स्वच्छता के बिना न ही आंतरिक स्वच्छता मुमकिन है और न ही शारिरिक। पारिस्थितिक स्वच्छता एक इंसान के जिंदगी में बहुत जरूरतमंद है।

पारिस्थितिक स्वच्छता का अर्थ है अपने परिस्थिति को स्वच्छ रखना। एक इंसान की परिस्थिति केवल उसके घर तक सीमित नहीं है। एक व्यक्ति जहा भी हो उस इलाको को स्वच्छ रखना उसकी जिम्मेदारी है। परिस्थिति एक मनुष्य के लिए लगातार बदलती रहती है। घर, कार्यस्थल, सड़क, पार्क आदि जगहों की सफाई हरेक नागरिक के मौलिक कर्तव्य में भी शामिल है। पारिस्थितिक स्वच्छता समाज में मौजूद

हरेक की जिम्मेदारी है।

आज ज्यादातर परिस्थिति कैसे दिखाई पड़ती है? प्लास्टिक से भरा-पड़ा बदबूदार मैदान, कारखानों और घरों से निकलने वाली कूड़े से भरी नदी व तालाब। सड़क के दोनों किनारे फेंके गये कचरे-कूड़े, गाड़ियों की खतरनाक धुआ से भरा अंतरीक्ष और जीवन के लिए तड़पती मछलियाँ एवं अन्य जंतुएँ।

आज कल हमारी पर्यावरण को विविध प्रकार के प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है।

जल प्रदूषण : पानी के स्त्रोतों का प्लास्टिक और अन्य कूड़ों से प्रदूषित होना।

वायु प्रदूषण : बढ़ती गाड़ियों की संख्या और कारखानों के खतरनाक धुआएँ।

मृदा प्रदूषण : प्लास्टिक के कोई ज़मीनी इलाकों में इकट्ठा रहने के कारण हो रही मृदा प्रदूषण।

पारिस्थितिकी स्वच्छता महत्वपूर्ण क्यों है?

विविध प्रकार के प्रदूषण के फलस्वरूप मच्छरों का और अन्य रोगाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है। स्वच्छता न होने से बिमारियाँ लगातार बढ़ती ही रहती हैं। डेंगु, मलेरिया जैसे जलजनित रोगों का प्रमुख कारण गंदगी ही है। विभिन्न प्रकार के रोगों से अपने आप को बचाने पारिस्थितिक स्वच्छता की खास जरूरत है।

स्वच्छ वायु, जल, खाना जैसे चीजों की उपलब्धि स्वच्छ वातावरण से ही प्राप्त होती है। इसलिए पारिस्थितिक स्वच्छता बहुत ही ज्यादा अहम बन जाता है।

साफ और स्वच्छ वातावरण हमेशा एक इंसान को ज्यादा ऊर्जवान और उत्साही बना देता है। सुंदर वातावरण सकारात्मक चिंता को मन के अंदर पैदा कराता है।

मनुष्य को खुश रखने में एक हद तक स्वच्छ वातावरण सहायता करती है।

पारिस्थितिक स्वच्छता के ओर समाज का मनोभाव

ज्यादातर लोग भी पारिस्थितिक स्वच्छता पर ध्यान नहीं देते। उनका मनोभाव कुछ अजीब सा हो जाता है। उन्हें लगता है कि सार्वजनिक जगहों की साफ सफाई केवल सरकार का काम है, लेकिन यह मनोभाव बिलकुल गलत है। एक इंसान कभी भी अपने घर को मलिन नहीं करता, लेकिन सारे कचरे-कूडे को सार्वजनिक जगहों पर जैसे कि - पार्क, सड़क आदि पर डाल देते हैं।

लोगों को समझना होगा की सार्वजनिक जगहों की स्वच्छता हरेक नागरिक का दायित्व है। इसे निभाने के लिए हम

सब को आगे आना ही होगा। बहुत सारे ऐसी व्यक्तियाँ भी हमारे समाज में है जो कूड़े-दान होने के बावजूद उसके बाहर कचरे-कूड़े डालते हैं। भारत में लोगों को लगातार बीमारियों का शिकार बनना पड़ रहा है इसी मनोभाव के कारण।

पारिस्थितिक स्वच्छता में कैसे योगदान दे-

- प्लास्टिक का कम से कम उपयोग और पुनर्चक्रण। केरल में प्लास्टि कचरे को इकट्ठा करने हर माह हरित सेना के कर्मचारियाँ आते हैं। इसी एक मॉडल बनाकर हरेक राज्यों में प्रावर्तिक कराना होगा।

- बाजार जाते वक्त कपड़ो के थैलों का उपयोग प्लास्टिक बाग की उपयोग घटा सकती है।

- सड़कों पर कूड़ा न फेंकना और फेंकने वालों को रोकना।
- खाने की अवशिष्ट (जैव) को कम्पोस्ट बनाकर उसमें ~~बिक्ष~~ निक्षेप करे।
- घर के आस पास रहने वालों के साथ मिलकर एक हफ्ते में एक बार सड़क साफ करे।
- जल जनित रोगों को कम करने ~~हे~~ हे घरों के पानी का क्लोरिनेशन किया जाता है आरोग्य विभाग के तहत।
- घर के आस पास के इलाकों में अगर प्लास्टिक में या कोई बर्तन में पानी जमा हो तो उसे पलटे ताकि मच्छर पैदा न हो पाये।
- जगह जगह पर कूड़े-दानों को स्थापित करना। जैव और अजैव कचरे के लिए अलग-अलग कूड़े दान होने चाहिए।

कारखानों में से निकलने वाली कचरे को शास्त्रीय तरीके से ~~निम्न~~ पानी की स्त्रोतसों में डाला जाये। न्यूट्रलैसेशन और पुनर उपयोग के माध्यम से यह संभव है।

जल स्त्रोतसों का समया-समय साफ कराना। प्लास्टिक और अन्य कचरे पानी की गति को रोक सकता है इसलिए ऐसी जगहों में सफाई करनी होगी।

आज के ज़माने में समुद्र में सबसे ज़्यादा कचरे-कूडे पाये जाते हैं। प्रत्येक तरीके के जहाज की मदद समुद्रों की सफाई बहुत ही ज़्यादा जरूरतमंद है क्योंकि ऑक्सिजन सबसे ज़्यादा समुद्रों में उत्पादन किया जाता है।

'स्वच्छ भारत अभियान' प्रधानमंत्री के तहत शुरू की गई एक योजना है जिसका

मकसद पारिस्थितिक स्वच्छता है। खुले में शौच को रोक शौचालयों का निर्माण इसी योजना का भाग है। साथ ही सब मिलकर सार्वजनिक जगहों को साफ भी करते हैं।

रोड के किनारे सुंदर पौधों को लगाना बच्चों के तहत किया जा सकता है। अपने विद्यालय को हफ्ते में दो बार साफ करना बच्चों के तहत किया जा सकता है। विद्यालय में बगीचे का निर्माण और देखभाल भी किया जा सकता है। बच्चे खाने वाले टॉफियों की कागज को कूड़े-दान में डाले तो उन्हें एक अच्छा भविष्य हम प्रधान कर सकते हैं।

प्लास्टिक का निर्माजन पुनर्चक्रण व पुनरउपयोग से हो सकता है। हालांकि

समुद्र में फंसी जीवियों का खोज किया गया है जो प्लास्टिक खाते है, इसमें भी आज बहुत सारे आविष्कारों को आना बाकी है।

'प्रतिरोध चिकित्सा से बेहतर हैं।'

पारिस्थितिक स्वच्छता न होना केवल मनुष्य को ही नहीं बल्कि जानवरों पर बुरा असर डालता है। बहुत सारे खबर सूचित करती है कि प्लास्टिक के खाने पशु, कुत्ते जैसे जानवरों को मौत तक का शिकार बनना पड़ा। यह सब मनुष्य की करतूत है जिसको अंतिम जानवर और मछली झेल रही है।

साफ-सफाई की आवश्यकता बचपन से ही बच्चों को सिखाना होगा, ताकि कल

उनकी प्रवृति एक जिम्मेदार नागरिक से हो। सार्वजनिक जगहें समाज का ही है न की किसी और का।

विद्यालयों में चलती एन.एस.एस, एन.एसी.एसी जैसे यूनीट्स पारिस्थितिक स्वच्छता को खास अहम देते आ रहे हैं युवा और बच्चे साथ मिलकर समाज में बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

मनुष्य की आरोग्य को बनाए रखने में अच्छा वातावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बिना स्वच्छ वातावरण के जीना मुश्किल है। दिल्ली में हो रही वायु प्रदूषण और यमुना नदी में हो रही प्रदूषण इसका उदाहरण है। अगर हम प्रकृति की संरक्षण नहीं कर सकते तो प्रकृति हमारी संरक्षण कैसे

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാം കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 948 Participant Code: 301

करेंगी -

"प्रकृति मनुष्य के आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त प्रधान करती है, लेकिन मनुष्य की लालच को पूरा करने मे कम पड़ जाती है।" — महात्मा गाँधी